



प्रलिमिंस फैक्ट्स: 15 सतिंबर, 2020

- [प्रसाद योजना](#)
- [शुकर के वातावरण में फॉस्फीन गैस की खोज](#)
- [मेकेदातु परियोजना](#)
- [सरोगेट साइरस](#)

प्रसाद योजना

PRASHAD Scheme

केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय ने **स्वदेश दर्शन** (Swadesh Darshan) और **प्रसाद** (PRASHAD) योजनाओं के तहत देश के वभिन्न बौद्ध स्थलों पर पर्यटन से संबंधित बुनयादी ढाँचा एवं सुवधाओं का वकिस कया है ।

स्वदेश दर्शन योजना:

- केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय ने वर्ष 2014-15 में पर्यटन स्थलों के **थीम आधारित एकीकृत वकिस** के लयि '[स्वदेश दर्शन योजना](#)' की शुरुआत की थी ।
- देश में बौद्ध स्थलों की पहचान स्वदेश दर्शन योजना के तहत 15 वषियगत सर्कटों में से एक के रूप में की गई है ।
- स्वदेश दर्शन योजना के तहत बौद्ध स्थलों के वकिस के लयि 353.73 करोड़ रुपए की कुल 5 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है ।

प्रसाद (PRASHAD) योजना:

- केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय ने वर्ष 2014-2015 में तीर्थस्थल संरक्षण एवं आध्यात्मिक विकास के लिये 'प्रसाद' (Pilgrimage Rejuvenation and Spiritual, Heritage Augmentation Drive- PRASHAD) परियोजना की शुरुआत की है।
- बुनियादी ढाँचे के विकास के लिये विभिन्न परियोजनाओं को भी प्रसाद योजना के तहत शुरू किया गया है।
- प्रसाद (PRASHAD) योजना के तहत 918.92 करोड़ रुपए की कुल 30 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है।

आइकॉनिक टूरिस्ट साइट्स:

- केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय ने बोधगया, अजंता एवं एलोरा में बौद्ध स्थलों को आइकॉनिक टूरिस्ट साइट्स (Iconic Tourist Sites) के रूप में वकिसति करने के लिये भी पहचान की है।

बौद्ध स्थलों को बढ़ावा देने के लिये किये जा रहे आधिकारिक प्रयास:

- केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय की विभिन्न योजनाओं के तहत पर्यटन संबंधी बुनियादी ढाँचे के विकास के अतिरिक्त भारत एवं विदेशी पर्यटन बाजारों में विभिन्न बौद्ध स्थलों को बढ़ावा देने पर भी जोर दिया जा रहा है।
- 'भारतीय पर्यटन कार्यालय' नियमिति रूप से विदेशी पर्यटन बाजारों में कई यात्राओं एवं पर्यटन मेलों के साथ-साथ भारत के बौद्ध स्थलों को बढ़ावा देने वाली प्रदर्शनियों में भाग लेता है।
- केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय ने [अतुल्य भारत](#) वेबसाइट पर बौद्ध स्थलों का प्रदर्शन किया है और एक वेबसाइट [www.indiathelandofbuddha.in](#) भी वकिसति की है। केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय भारत के बौद्ध गंतव्य एवं दुनिया भर के प्रमुख पर्यटन बाजारों के रूप में प्रचार करने के उद्देश्य से क्रमिक वर्ष में बौद्ध कॉन्क्लेव का आयोजन करता है।

बौद्ध सर्कटि में स्वदेश दर्शन के तहत स्वीकृत परियोजनाएँ:

- बौद्ध सर्कटि में स्वदेश दर्शन के तहत स्वीकृत परियोजनाओं की मुख्य सूची नमिनलखिति है:
 - लखनऊ सर्कलि के शाक्य पिपरावा (Sakyas Piprahwa) के मठ, साइट एवं स्तूप
 - लखनऊ सर्कलि में श्रावस्ती (Sravasti)
 - सारनाथ सर्कलि का प्राचीन बौद्ध स्थल
 - सारनाथ सर्कलि का चौखंडी स्तूप (Chaukhandi Stupa)
 - सारनाथ सर्कलि के बौद्ध अवशेष एवं कुशीनगर स्थिति महापरनिर्वाण मंदिर

आध्यात्मिक पर्यटन:

- स्वदेश दर्शन एवं प्रसाद (PRASHAD) योजनाओं के तहत केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय आध्यात्मिक पर्यटन को बढ़ावा दे रहा है।
- आध्यात्मिक सर्कटि की पहचान स्वदेश दर्शन योजना के तहत 15 विषयगत सर्कटिों में से एक के रूप में की गई है।
- स्वदेश दर्शन योजना के तहत आध्यात्मिक सर्कटि के विकास के लिये 764.85 करोड़ रुपए की कुल 13 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है।
- इसके अलावा धार्मिक एवं आध्यात्मिक स्थलों पर बुनियादी ढाँचे के विकास के लिये भी परियोजनाएँ शुरू की गई हैं।

शुक्र के वातावरण में फॉस्फीन गैस की खोज

The discovery of phosphine gas in the atmosphere of Venus

16 सितंबर, 2020 को शुक्र के वातावरण में फॉस्फीन गैस (Phosphine Gas) की खोज के बारे में खगोलविदों की एक अंतरराष्ट्रीय टीम की एक घोषणा ने शुक्र ग्रह पर जीवन की उपस्थिति की संभावना को बढ़ाया है।

प्रमुख बटु:

- औद्योगिक प्रक्रियाओं में उत्पादित होने के अलावा फॉस्फीन एक रंगहीन कति गंधयुक्त गैस है जो केवल बैक्टीरिया (जो ऑक्सीजन की अनुपस्थिति में भी जीवित रहते हैं) की कुछ प्रजातियों द्वारा बनाई जाती है।
- 'नेचर एस्ट्रोनॉमी' (Nature Astronomy) में प्रकाशित एक लेख में वैज्ञानिकों ने शुक्र ग्रह के वातावरण में फॉस्फीन गैस के अंश मलिन की सूचना दी है।
- वास्तव में यह खोज वर्ष 2017 में की गई थी और वैज्ञानिकों ने इसे सार्वजनिक करने का निर्णय लेने से पहले पछिले तीन वर्षों में अपने डेटा की कई बार जाँच की।

खोज की महत्ता:

- यह पृथ्वी से दूर कहीं अन्य ग्रह पर जीवन की संभावना के लिये अभी तक का सबसे विश्वसनीय प्रमाण है।
- वैज्ञानिकों के अनुसार, चंद्रमा या मंगल ग्रह पर पानी की खोज की तुलना में शुक्र ग्रह पर की गई यह खोज अधिक महत्वपूर्ण है।

शुक्र ग्रह पर जीवन की संभावना या असंभावना?

- शुक्र ग्रह का तापमान बहुत अधिक है और इसका वातावरण अत्यधिक अम्लीय है, ये दो विशेषताएँ शुक्र ग्रह पर जीवन की संभावना को असंभव बना देती हैं।

शुक्रायण (Shukrayaan):

- आने वाले समय में [भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन](#) 'शुक्रायण' (Shukrayaan) के नाम से एक वीनस मशिन या शुक्र मशिन की योजना बना रहा है।

शुक्र ग्रह:

- शुक्र ग्रह को पृथ्वी की जुड़वाँ बहन (Sister Planet) के नाम से भी जाना जाता है।
- शुक्र सौरमंडल का सबसे चमकीला ग्रह है।
- इसे **भोर का तारा** (Morning Star) और **साँझ का तारा** (Evening Star) कहा जाता है।
- यह सूर्य से दूसरा सबसे नजिकतम ग्रह है।
- मैगलन अंतरिक्ष यान (Magellan Spacecraft) को राडार मैपिंग मशिन के तहत शुक्र ग्रह पर वर्ष 1989 में भेजा गया था।

मेकेदातु परियोजना

Mekedatu Project

केंद्र सरकार द्वारा मेकेदातु परियोजना (Mekedatu Project) के निर्माण हेतु मंजूरी देने के लिये कर्नाटक सरकार का एक प्रतिनिधि मंडल (मुख्यमंत्री के नेतृत्व में) केंद्र सरकार के पास भेजा जाएगा।

प्रमुख बिंदु:

- वर्ष 2017 में राज्य सरकार द्वारा अनुमोदित 9,000 करोड़ रुपये की यह परियोजना केंद्रीय जल संसाधन मंत्रालय से अनुमोदन प्राप्त कर चुकी है कति इसे केंद्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्रालय से अभी मंजूरी नहीं मिली है क्योंकि तमलिनाडु सरकार ने इस परियोजना के खिलाफ उच्चतम न्यायालय में याचिका दायर की है।

मेकेदातु परियोजना:

- मेकेदातु परियोजना एक प्रकार की 'मेकेदातु संतुलन भंडार' (Mekedatu Balancing Reservoir) है जिसे पीने के पानी के लिये भंडारण करने हेतु प्रस्तावित किया गया है।
- इस परियोजना का निर्माण कर्नाटक के रामनगरम जिले के कनकपुरा के पास किया जाएगा।
- मेकेदातु परियोजना एक गुरुत्व बांध है जो मेकेदातु में 67.16 टीएमसी जल संग्रहित करेगा। इसमें से 4.75 टीएमसी जल की आपूर्ति पेयजल के उद्देश्य से बंगलुरु को की जाएगी।
- यह परियोजना कर्नाटक और तमलिनाडु के बीच विवाद का एक प्रमुख कारण है क्योंकि इसे कावेरी नदी पर बनाया जा रहा है जो दोनों राज्यों के लिये पानी के सबसे महत्वपूर्ण स्रोतों में से एक है।
- इस परियोजना के निर्माण से कावेरी वन्यजीव अभयारण्य की 50 वर्ग किलोमीटर की वन भूमि जलमग्न हो जाने की संभावना है।

सरोगेट साइरस

Surrogate Sires

[वैश्विक खाद्य असुरक्षा](#) से निपटने के लिये पहली बार वैज्ञानिकों ने ऐसे जानवर तैयार किये हैं जो व्यवहार्य रूप से 'सरोगेट साइरस' (Surrogate Sires) के रूप में कार्य कर सकते हैं। अर्थात् नर जानवर जो केवल दाता जानवरों के आनुवंशिक लक्षणों को ले जाने वाले शुक्राणु पैदा करते हैं।

प्रमुख बद्धि:

- गौरतलब है कि बढ़ती वैश्विक आबादी हेतु खाद्य उत्पादन को बढ़ावा देने के लिये पशुधन में सुधार करना एक दीर्घकालिक लक्ष्य है।
- शोधकर्ताओं ने चूहों, सूअरों, बकरियों एवं मवेशियों की संख्या बढ़ाने के लिये **क्रिस्पर-कैस 9 (CRISPR-Cas9)** का उपयोग किया जिनमें नर प्रजनन क्षमता के लिये विशिष्ट जीन की कमी थी।

क्रिस्पर-कैस 9 (CRISPR-Cas9):

- क्रिस्पर-कैस 9 (CRISPR-Cas9) एक ऐसी तकनीक है जो वैज्ञानिकों को अनविर्य रूप से डीएनए काटने और जोड़ने की अनुमति देती है, जिससे रोग के लिये आनुवंशिक सुधार की उम्मीद बढ़ जाती है।
- क्रिस्पर (Clustered Regularly Interspaced Short Palindromic Repeats) डीएनए के हिस्से हैं, जबकि कैस-9 (CRISPR-ASSOCIATED PROTEIN9-Cas9) एक एंजाइम है। हालाँकि, इसके साथ सुरक्षा और नैतिकता से संबंधित चर्चाएँ जुड़ी हुई हैं।
- वैज्ञानिकों के अनुसार, इससे पशुधन में वांछनीय विशेषताओं जैसे- चरम मौसम के प्रति अनुकूलन, बीमारियों के प्रति प्रतिरोधात्मक क्षमता का विकास आदि, का प्रसार और तेज़ हो सकता है। इससे विकासशील देशों में किसानों को लाभ होगा।
- हालाँकि मौजूदा सरकारी नियम इन [जीन-संपादित](#) (Gene-edited) जानवरों के खाद्य श्रृंखला में इस्तेमाल होने से रोकते हैं।